ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 6 अंक : 3 फरवरी - मार्च 2016 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्री पुष्पित पारासर
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/- दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

नव वर्ष 2016 का करें स्वागत	डा. महेश पारासर	2
शनि और राहु का सम्बन्ध	डा. रचना के भारद्वाज	4
शिव को अतिप्रिय रूद्राभिषेक	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
आजीविका में बुध का प्रभाव	पुष्पित पारासर	6
श्री सरस्वती पूजन पर्व बसंत पंचमी एक शुभ मुहूर्त	पवन कुमार मेहरोत्रा	7
शून्य मुद्रा	विष्णु पाराशर	8
गौ माता	मोहिनी पाराशर	8
श्री कृष्ण के गृह क्षेत्र आगरा के राज गहरे (सीक्रेटस ऑफ आगरा)	सुरेश अग्रवाल	9
अपवाद और अनुभव योग– ज्योतिषीय उपयोगिता	कस्तूर चन्द जैन	10
ज्योतिष से करें शिक्षा क्षेत्र का चुनाव	अजय दत्ता	11
जरूरत है सक्षम एंव सफल राजनैतिक नेतृत्व की	ललित गर्ग	12
जो होता है अच्छे के लिए होता है।	रामा गुप्ता	13
सेवंई घेबर	शुभी गुप्ता	14
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	15–16
पूजा – सामग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

नव वर्ष 2016 का करें स्वागत

हमारी हिन्दू संस्कृति में नव संवत्सर वर्ष चैत्र सुदी प्रतिपदा यानी पड़वा से प्रारम्भ होता है परन्तु आज ईसामसीह की ईसवीं से ही नववर्ष की स्वीकार्यता बढ़ गई है। हमारी संस्कृति सभी धर्मो का सम्मान करने की है। सम्पूर्णधरा हमारी मां है और पृथ्वी पुत्र होने के कारण समस्त विश्व हमारे कुटुम्ब स्वरूप ही है। हम भी इसी मनोभावना से नए वर्ष 2016 का स्वागत करने को तत्पर है। हमारी कामना है कि नववर्ष की स्वार्णिम आभा से सकल विश्व जगमगा उठे। हमारा प्रत्येक कल रंगीन फूलों की बगिया की तरह महकता रहे।

प्रकृति भी पतझड़ के बाद नव पल्लव से आच्छादित होने को आतुर हो उठती है। नया पाने का उत्साह, सपना साकार होने की आशा, मन में जिज्ञासा, कुछ सवाल तो कुछ आशकाएं कि हमने पिछले साल क्या गंवाया? क्या कोई बदलाव करना होगा? क्या शेष रह गया है? नये साल में क्या योजनाएं कौन सी है? यह आवश्यक नहीं कि नववर्ष के अवसर पर प्रत्येक व्यक्ति नए संकल्पो की पूर्ति हेतु प्रतिबद्ध हो लेकिन चुनौतियों से पार पाने की प्रतिबद्धता तो व्यक्त करनी ही होगी। नया साल काफी कुछ ला रहा है। तो हमें भी सामाजिक सद्भाव बनाए रखना है। अगले 12 माह में राष्ट्र हित के मार्ग पर चलने की जिम्मेदारी सरकार से पहले समाज की है। यदि हम यह कर सकें तो भारत खुशहाली के रास्ते पर चलता रहेगा।

क्या सौगात लेकर आयेगा वर्ष 2016 आपकी राशि के लिये

मेष राशि – साल की शुरूआत से आपकी राशि का स्वामी मंगल अपने से सप्तम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप वैवाहिक जीवन सुख मय रहेगा एंव जीवनसाथी के साथ तालमेल बना रहेगा। बृहस्पति का पंचम स्थान पर स्थित रहना संतान संबधी चिंताये दे सकता है। परन्तु स्वास्थ्य के लिये अनुकूल रहेगा। शनि की ढैया आप पर रहेगी। जिसके कारण अपने बात करने पर ध्यान देना चाहिये अन्यथा मुश्किलें बढ़ सकती है। गर्भवती महिलायें अत्यन्त सावधान रहें। उन्नति में देरी हो सकती है। **ज्योतिषीय सुझाव** : काले कपड़े न पहनें।

वृष राशि– इस वर्ष आपको धैर्य रखना पडेगा अगर आप धैर्य नहीं रख पायेगें तो नुकसान होने की संभावना रहेगी। आपकी राशि के स्वामी शुक्र शनि देव के साथ बैठे हुये है। जिसके फलस्वरूप वैवाहिक स्थिति अच्छी रहेगी। धैर्य रखते हुए पति को समझना वैवाहिक स्तर को बढायेंगा। बृहस्पति आपकी राशि से चतुर्थ भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप कारोबार में लाभ मिलेगा। **ज्योतिषीय सुझाव**– नीले कपड़े न पहने।

मिथुन राशि – आपकी राशि का स्वामी बुध वर्ष के शुरूआत में अष्टम भाव में स्थिति है जिसके कारण स्वास्थ्य की तरफ से चिंताये लगी रहेगी जिसमे 28 अप्रैल से 22 मई और 30 अगस्त से 22 सितम्बर में ध्यान रखें। पराक्रम एंव आत्मविश्वास खूब बढ़ेगा। संतान से संबन्धित शुभ समाचार मिलने के संकेत है। जुलाई के बाद आपके अधिकारी भी प्रभावित होगें। शत्रुओं से सावधान रहे। **ज्योतिषीय सुझाव**– चमडे से बनी वस्तुओं का प्रयोग न करें।

कर्क राशि – साल की शुरूआत में नई मित्रों से मेल जोल बढेगा। साहस एंव शौर्य की भी वृद्धि होगी। निवेश करने की परिस्थिति बनेगी। प्रेमी से अनवन हो सकती है। गलतफहमियों को तुरन्त दूर करे एंव धैर्य से काम लें। वाकपटुता से विक्री के लक्ष्य मे लाभ मिलेगा। मधुमेह और बवासीर के रोगी अपना विशेष ध्यान रखें। अच्छा धन आने की संभावना रहेगी परन्तु ध्यान से संभालना पडेगा अन्यथा खर्चा हो जायेगा। **ज्योतिषीय सुझाव**– काले कपडे न पहने, अंधविश्वास न करें।

सिंह राशि– साल की शुरूआत से ही आपको यह बात ध्यान मे रहनी चाहिये कि आप जाने अनजाने में महिलाओं को कष्ट न पहुचायें।

माता के स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता अधिक रहेगी। नौकरी पेशी महिलाओं को दफतर में ज्यादा जिम्मेदारी सौपी जा सकती है। अगस्त के बाद पारिवारिक तनाव रह सकता है। चल अचल सम्पति खरीदने का योग है। सन्तान की तरफ से भी चिन्ता कम रहेगी। नौकरी पेशा लोगो के लिये यह वर्ष संतोष जनक रहेगा। **ज्योतिषीय सुझाव**– हरा और नीला रंग न पहने महिलाओं की इज्जत करें।

कन्या राशि – यह वर्ष आपके लिये चुनौतियों भरा रहेगा। खर्चा अधिक होगा एंव आमदनी कम रहेगी। संतान से सम्बन्धित भी परेशान रहेगें। शारीरिक पीड़ा अधिक रहेगी। भाग्य से भी सहायता कम मिलेगी। किसी पर भी आंख बंद कर के भरोसा न करें अन्यथा धोखा मिलेगा। नौकरी की तरफ से शुभ संकेत है। वैवाहिक जीवन सुखमय बीतेगा। **ज्योतिषीय सुझाव**– अपने सिराहने पानी का ग्लास भरकर रखें सुबह उठकर जल किसी पौधे में डाल दे। सर्वकार्य सिद्ध रक्षा कवच धारण करे।

तुला राशि– आपकी राशि पर शनि की साढेसाती चल रही है। धन एंव परिवार के सुखमें कमी रहेगी। आय के स्रोत कम होंगे। निवेश करना हो तो लम्बे समय के लियें करें अन्यथा हानि निश्चित है। छोटे भाई वहिन के साथ सम्बन्ध सुधरेंगे। अपने से बडों का आदर करे एंव घर से निकलने से पूर्व पैरों का स्पर्श करके निकलें। चोट दुर्घटना भी संभव हे। **ज्योतिषीय सुझाव**– अपने से बडों का आदर करें। नीला रंग धारण करें। महामृत्युंजय रक्षा कवच धारण करें।

वृश्चिक राशि – आपकी राशि का स्वामी मंगल ग्रह है जिसकी स्थिति के फलस्वरूप स्वास्थ्य थोडा गडबड रह सकता है। अपने अधिकारी से न उलझे। प्रयास करने पर ही आपको इच्छाओं की पूर्ति होगी। आप धनार्जन के नये तरीके ढूढेगें। आप अपने व्यवसाय संबधित कई नये उत्पाद की शुरूआत होगी। अगस्त के बाद व्यवसायिक चिंताए और भाग्य में रूकावटे धीरे धीरे समाप्त हो जायेगी। **ज्योतिषीय सुझाव**– बंदरों को केला खिलायें, श्री यंत्र स्थापित करें।

धनु राशि– अगर आप का व्यापार या नौकरी विदेश से सम्बन्ध रखती है तो यह नया साल आपके लिये शुभ रहेगा। पति के साथ अनबन हो सकती है। धर परिवार में सुख शाति का माहौल बना रहेगा। मन पंसद नौकरी पाने का भी योग है। बुजुर्ग के स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। उच्च शिक्षा का भी योग बनेगा। **ज्योतिष सुझाव** – मीठा खाकर एंव पानी पीकर घर से बाहर निकलें।

मकर राशि – आपकी राशि का स्वामी शनि है। इसीलिये क्रोध पर काबू रखना आपके स्वास्थ्य सामजिक स्तर एंव वैवाहिक जीवन के लिये जरूरी है। व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। आय के नये स्त्रोत बनेगें। उधार दिया हुआ। धन वापिस आयेगा। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छे अवसर प्राप्त होगें। छोटे भाई बहिन को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। छोटी यात्राएं न करे। **ज्योतिषीय सुझाव**– पीले चन्दन का तिलक लगायें। शनि यंत्र अपने पास रखें एंव रोजाना धूपबत्ती दिखायें।

कुम्भ राशि – जमीन जायदाद संबन्धित मामलों में सफलता मिल सकती है। भाग्य का पूर्ण साथ मिलेगा। आत्मविश्वास की वृद्धि होगी एंव चुनौतियों का सामना डर के करेंगें। व्यर्थ की यात्राओं में फिजूल खर्ची से बचे। धर्म के प्रति झुकाव रहेगा। धन संचय करने में मुश्किलें आ सकती है। जीवन साथी से मन मुटाव की स्थिति बन सकती है। विदेश से सम्बन्धित व्यापार में लाभ की वृद्धि होगी। **ज्योतिषीय सुझाव** – नीले कपडे न पहने। बिजली का सामान ठीक हालात में रखें।

मीन राशि – रोग, ऋण एंव शत्रुओं की वृद्धि हो सकती है। धन व परिवार सम्बंधी चिंताये अधिक रहेगी। व्यापारिक यात्रायें सफल रहेगी। विधवा स्त्रियों की मदद करें, आदर करें। वैवाहिक जीवन में जीवन साथी के साथ कुछ टकराव रहेंगें। धन दौलत की वृद्धि होगी। परन्तु थोड़ी सी भी लापरवाही हानि करा सकती है। संतान की पढाई को लेकर चिंतित रहेगे। जोडो के दर्द से आपको अधिक परेशानी रहेगी। **ज्योतिषीय सुझाव** – शनि देव की प्रतिमा के दर्शन करें परन्तु तेल न चढायें। कुत्तो को टोस्ट खिलायें।

महेश पाराशर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. आपने घर का नक्शा भेज रहे है। कृपया बिना तोड़ फोड़ के वास्तु दोष का उपाय बतायें। **सतीश अग्रवाल, आगरा**

समाधान– आपके घर में प्रायः सभी कमरे उत्तर या उत्तर पूर्व में स्थित हैं। अतः दक्षिण पश्चिम के आर कम होने से स्थायित्व की कमी रहती है। अभी ज्यादा तोड़ फोड़ ना करके दक्षिण दिशा में लगे दर्पणो के उत्तर दिशा में स्थानांतरित करें, अनावश्यक खर्च कम होने ओर मानसिक तनाव भी कम होगा।

समस्या– 2. मेरा काम धंधा सही नही चल रहा, पैसे नही रूकते। घर का नक्शा प्रेषित है। समाधान करें। **मदन मोहन, बरेली**

समाधान– आपके घर में उत्तर पूर्व में स्थित सीढिया तथा उसके नीचे बना शौचालय मुख्य कारण है। ये एक प्रमुख वास्तु दोष है। आप इसको तुरन्त ठीक करायें। आपको तुरन्त लाभ मिलेगा।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

शनि और राहु का सम्बन्ध

डा. रचना के भारद्वाज (पी.एचडी)
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तु शास्त्राचार्य,
अंक विशारद
नई दिल्ली

राहु का नाम केतु के साथ लिया जाता है परंतु इन दोनों ग्रहों में जितना विभेद है उतनी ही समानता राहु एंव शनि में है, शनि और राहु इन दोनों ग्रहों को पाप ग्रह के रूप में माना जाता है, ज्योतिषशास्त्र में शनि और राहु को एक विचार एंव गुणों वाला भी माना गया है, आमतौर पर इन दोनों ही ग्रहो को दुख एंव कष्ट का कारक समझा जाता है, लेकिन ये दोनों ही ग्रह कुण्डली में बलवान हो तो राजयोग के समान फल देते है, राहु केतु में कुछ समानता है तो कुछ विभिन्नता भी हैं फिर भी ज्योतिषशास्त्र के बहुत से विद्वानों की सामान्य धारणा है कि शनि एंव राहु एक समान ग्रह है दोनो ही ग्रह एक समान फल देते है।

शनि राहु में समानता- शनि एंव राहु दोनों ही कार्मिक ग्रह माने जाते है, कार्मिक का अर्थ होता है कर्म के अनुरूप फल देने वाला। नवग्रहों में शनि देव को दण्डनायक का पद प्राप्त है जो व्यक्ति को उनके पूर्व जन्म के कर्मो के अनुसार सजा भी देते है और पुरस्कार भी। राहु का फल भी शनि की भांति पूर्व जन्म के अनुसार मिलता है, राहु व्यक्ति के पूर्व जन्म के गुणों एंव विशेषताओं को लेकर आता है।

शनि एंव राहु दोनों ही ग्रह दुख, कष्ट, रोग एंव आर्थिक परेशानी देने वाले होते है परन्तु जन्मपत्री में ये दोनों अगर शुभ स्थिति में हो तो बड़े से बड़ा राजयोग भी इनके समान फल नहीं दे सकता। यह व्यक्ति को प्रखर बुद्धि, चतुराई, तकनीकी योग्यता प्रदान कर धन दौलत से परिपूर्ण बना सकते है ऊँचा पद, मान सम्मान एंव पद प्रतिष्ठा सब कुछ इन्हें प्राप्त होता है।

शनि राहु में भेद- शनि राहु में कुछ समानताएं है तो इनमें अंतर भी है शनि का भौतिक अस्त्वि है अर्थात् यह पिण्ड के रूप में मौजूद हैं जबकि राहु एक आभाषीय बिन्दु है इसका कोई भौतिक अस्तित्व नहीं है। मकर एंव कुम्भ इन दोनों राशियों का स्वामित्व शनि को प्राप्त है जबकि राहु की अपनी कोई राशि नहीं है। राहु जिस राशि में बैठता है उसे अपने अधिकार में कर लेता है। शनि देव की गति मंद होने के कारण शनि का फल बिलम्ब से अथवा धीरे धीरे प्राप्त होता है जबकि राहु जल्दी फल देने वाला ग्रह है यह एक पल में अमीर बना देता है तो दूसरे ही पल कंगाल बनाने की भी योग्यता रखता है। शनि देव का गुण है कि यह व्यक्ति को ईमानदारी एंव मेहनत से आगे बढ़ने की प्रेरणा देते है तो राहु चतुराई एंव आसान तरीकों से सफलता पाने का विचार उत्पन्न करता है।

शनि राहु में विभेद के साथ समानता- शनि एंव राहु में एक बहुत ही रोचक विभेद एंव समानता है राहु वृष राशि में उच्च का होता है और वृश्चिक में नीच का, तो शनि तुला में उच्च होते है एंव मेष में नीच होते है। इस तरह दोनों ही शुक्र की एक राशि में उच्च के होते है और मंगल की एक राशि में नीच के हो जाते है।

❋❋❋

रचनाएँ आमंत्रित है

प्रिय पाठकों,

भविष्य निर्णय पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है। इस पत्रिका की विषय सामग्री को और रुचिकर बनाने हेतु रचनाएँ आमंत्रित की जाती है जिसमें ज्योतिषीय उपायों से प्राप्त परिणाम, आर्युवैदिक चिकित्सा के नुस्खे, व्यायाम प्राणायाम कैसे करें, मुद्राओं से लाभ, व्यवहारिक विज्ञान, भारतीय संस्कारो की स्वीकार्यता, सामाजिक -पारिवारिक हित के लेख, सच्चे संस्मरण आदि हो सकते है।

आप अपनी मौलिक रचनाएँ नीचे दिए गए पते पर, ई. मेल पर या व्हाटस ऐप पर अपनी फोटो सहित भेज सकते है।

हमारा पता है- भविष्य दर्शन, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। पिन : 282002 मों. 9719666777

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

❋❋❋

शिव को अतिप्रिय रूद्राभिषेक

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता; अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

शिव का शब्दिक अर्थ कल्याणकारी होता है। इस दृष्टि से महाशिवरात्रि व्रत का अर्थ हुआ कल्याणकारी रात्रि। यह रात्रि महासिद्धिदायी होती है। इस समय में किये गये दान पुण्य शिवलिंग की पूजा, स्थापना एंव अभिषेक हवन का विशेष फल प्राप्त होता है।

सृष्टि के आरम्भ में इसी दिन मध्य रात्रि को भगवान शिव का ब्रह्मा की भौहों से रूद्ररूप में अवतरण हुआ था। प्रलय की वेला में इसी दिन प्रवेश के समय तांडव करते हुए भगवान शिव ने ब्रह्मांड को अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर दिया था। इसलिये इसे महाशिवरात्रि अथवा कालरात्रि कहा जाता है। महाशिवरात्रि शिव के लिंग रूप में उद्भव का दिन भी माना जाता है। यूं भी भगवान शिव संहार शक्ति और तमोगुण के अधिष्ठाता माने जाते है। इसलिये रात्रि से उनका स्नेह होना स्वाभाविक ही कहा जायेगा। यही कारण है कि इनकी आराधना न केवल रात्रि में अपितु सदैव प्रदोष काल में सूर्यास्त और रात्रि की सन्धि वेला में करने का शास्त्र सम्मत विधान है।

महाशिवरात्रि का व्रत भगवान शिव की पूजा आराधना के निमित ही बनाया गया है। इस व्रत को भगवान श्री राम, राक्षस राज रावण, दक्षकन्या सती, हिमालय कन्या पार्वती, और विष्णुपत्नि लक्ष्मी ने भी किया है। जो मनुष्य शास्त्रानुसार इस व्रत में उपवास रखकर जागरण करते है उनको अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है। इस दिन पारद शिवलिंग का विधि विधान से अभिषेक किया जाय तो सैकड़ो गुना अधिक पुण्य प्राप्त होता है।

महाशिवरात्रि को गंगा स्नान का बड़ा महात्म्य बताया गया है। शिवजी की पूजा में बेलपत्र को चढाना विशेष महत्व रखता है। ऐसा बेलपत्र जिसमें तीन या पांच पत्ते एक में हो तथा स्वच्छ हों। भक्त चढायें गये बेलपुत्र की संख्या के बराबर युगों तक कैलाशधाम में सुखपूर्वक वास करता है वह श्रेष्ठ योनि मे जन्म लेकर भगवान शिव का परम भक्त होता है। पूजा में केवल तीन पत्तियों या पांच पत्तियों वाले अखंडित वेलपत्र ही चढाने का विधान शास्त्र सम्मत है जो मन ,वचन कार्म से श्रद्धा और सामर्थ्य के साथ भगवान शिव को अर्पित किया गया हो। शास्त्रों के अनुसार वेलपत्र की तीन पत्तियों को शिव के त्रिनेत्र का प्रतीक माना गया है।

स्मरण रहे कि शिवलिंग पर चढायें गये पुष्प फल दूध आदि के नैवेध को ग्रहण नहीं करने का विधान शास्त्रों में वर्णित है। भगवान शिव की मूर्ति के पास शालिग्राम की मूर्ति रखना अनिवार्य है। यदि शिव की मूर्ति के पास शालिग्राम हो तो नैवेध खाने का दोष नहीं लगता है।

महाशिव रात्रि को करें रूद्राभिषेक

अनादि अनन्त देवाधिदेव महादेव शिव पर ब्रहा है। सहस्त्र नामों से जानने वाले शिव साकार निराकार ओंकार और लिंगाकार रूप में महादेव रहस्यों के भंडार है। बडे बडे महर्षि ज्ञानी साधक भक्त और यहां तक की स्वंय ईश्वर भी उनके संपर्क रहस्य नहीं जान सके है। महा शिवरात्रि भोले भंडारी की पूजा का सर्वोतम दिन है। भगवान शिव को पूजा में सबसे प्रिय रूद्राभिषेक है। शास्त्रों में अलग अलग इच्छाओं की पूर्ति के लिये रूद्राभिषेक की विभिन्न बस्तुऐं बताई गई है।

1. धन की प्रप्ति के लिये शहद और देशी घी से भगवान शिव का अभिषेक करें।
2. मोक्ष प्राप्ति के लिये किी तीर्थ स्नान के जल से अभिषेक करें।
3. पुत्र प्राप्ति के लिये कच्चे दूध से अभिषेक करें।
4. पशु प्राप्ति के लिये दही से अभिषेक करें।
5. लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये गन्ने के रस द्वारा शिव को प्रसन्न करें।
6. बुखार के प्रकोप से बचने के लिये जलधारा से अभिषेक करें।

शेष पेज 19 पर.....

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

आजीविका में बुध का प्रभाव

पुष्पित पारासर
दैवज्ञ शिरोमणि, ज्योतिष ऋषि , वास्तु ऋषि,
अंक विशारद, नजर दोष एवं हस्ताक्षर विशेषज्ञ
ज्योतिष प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

बुध को शुभ ग्रह के रूप में जाना जाता हैं यह ज्ञान बुद्धि व बुद्धि का स्वामी माना जाता है। इस ग्रह की स्थिति से बोल चाल के तौर तरीकों का भी विश्लेषण किया जाता है। बुध की विशेषता है कि यह दूसरे ग्रहों के गुणों को ग्रहण कर उसी के अनुरूप फल देता है। अगर यह मंगल या शनि के साथ होता है। तो इन्हीं ग्रहों के अनुरूप फल देता है। जबकि शुभ ग्रहों के साथ होता है। तो इसके शुभ फलों में वृद्धि होती है। बुद्धि एंव मस्तिष्क का स्वामी होने के कारण आजीविका स्थान में बुध के होने पर बुद्धि से सम्बन्धित कार्यो को आजीविका के तौर पर लेना फायदेमंद होता है।

आजीविका में बुध से सम्बन्धित क्षेत्र : बुध से सम्बन्धित आजीविका के क्षेत्रों में संचार के सभी साधनों को शामिल किया गया है। प्रेस का काम लेखक, प्रकाशक संवाददाता एंव एडिटर का कार्य भी बुध से सम्बन्धित आजीविका के क्षेत्र माने जाते है बुध गणित विषय में व्यक्ति को अच्छी योग्यता देता है तथा व्यावसायिक बुद्धि देता है। अतः किसी भी वस्तु के व्यवसाय में उन्हें आमतौर पर अच्छी सफलता मिलती है अकांउट से जुडे हुए कार्य हों अथवा कम्प्युटर सॉफटवेयर के कार्य इन सभी कार्यो में बुध अच्छी सफलता देता है। शिक्षा से सम्बन्धित क्षेत्रों में लाइब्रेरियन की नौकरी भी बुध से सम्बन्धित क्षेत्र होता है। कुण्डली के दसवे भाव में बुध होने से वकील जासूसी राजदूत उच्चाधिकारी एंव विदेशी मामलों के अधिकारी बनने हेतु योग्यता प्राप्त कर प्रयास करना इन क्षेत्रों में सफलता दिलाता है।

बुध एंव अन्य ग्रहों के सम्बन्ध से आजीविका

बुध और सूर्य से आजीविका– बुध व सूर्य कुण्डली में किसी भी स्थान पर हो तो बहुत ही शुभ योग बनता है। जिसे बुधादित्य योग के नाम से जाना जाता है। योग अगर दसम भाव में बनता है वह भी उच्च मित्र या स्वराशि में तो आजीविका की दृष्टि से अत्यंत शुभकारी होता है। इस शुभ स्थिति में व्यक्ति ज्ञान व विद्या से उच्च पद व प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। अगर आपकी कुण्डली में यह योग बन रहा है तो आप सरकारी नौकरी हेतु प्रयास कर सकते हैं। इस क्षेत्र में आप उच्चाधिकारी बन सकते है। वाणिज्य के क्षेत्र में आप प्रयास करेंगें तो चार्टर अकाउंटेंट बन सकते हैं साफटवेयर के काम मे भी यह योग आपको सफलता दिला सकता है।

बुध व मंगल से आजीविका– बुध का सम्बन्ध मंगल के साथ होने पर आप रसायन से संबन्धित कार्य कर सकते है। जैसे एल. पी.जी, पेट्रोलियम कम्पनी, मे काम करना या खुद का पंप खोलना। लुवरीकेटींग ऑयल का काम भी आपके लिये आजीविका का बेहतर माध्यम हो सकता है।

बुध और चन्द्र से आजीविका– बुध व चन्द्र दोनो ही शुभ ग्रह है इन दोनो ग्रहों का सम्बन्ध आजीविका स्थान से होने से आजीविका के विषय में शुभ फल प्राप्त होता है। अगर आपकी कुण्डली में इन दोनें ग्रहों का योग बन रहा है। तो आजीविका के तौर पर आप उन चीजों में कामयाब हो सकते हैं जिनमें कलात्मक व कल्पनाशीलता की जरूरत होती है, इस लिहाज से कला के किसी भी क्षेत्र में आप प्रयास कर सकते है चाहे वह फाईन आर्ट हो, संगीत निर्देशन गायन अथवा लेखन का काम हो इन सभी क्षेत्रों में आप सफल हो सकते है।

बुध व गुरू से आजीविका– गुरू धर्म कर्म का ग्रह माना जाता है और बुध मस्तिष्क एंव बुद्धि का स्वामी होता है, यही कारण है कि आजीविका स्थान से इन दोनों ग्रहों का सम्बन्ध होने से आप अकाउटेंट के काम मे सफलता प्राप्त कर सकते है। धार्मिक संस्थानों एंव धर्मस्थलों में फाइनेंस का काम भी आजीविका के तौर पर अपना सकते है। कमिटी एंव सामाजिक कार्यो से सम्बन्धित विभागों में आपकों अच्छी सफलता मिल सकती है। आप चाहें तो शिक्षण संस्थान खोल सकते है। अथवा शिक्षण का कार्य कर सकते

शेष पेज 18 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

श्री सरस्वती पूजन पर्व बसंत पंचमी
एक शुभ मुहूर्त

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

लोक प्रसिद्ध मुहूर्तो मे बंसत पंचमी का पर्व आता है। इसे अनपूछा या अबूझ मुहूर्त की संज्ञा प्राप्त है। लोक व्यवहार की दृष्टि में इस मुहूर्त को स्वयम् सिद्ध माना जाता है। यह प्रत्येक शुभ कार्य में बड़ी ही श्रद्धा के साथ अपनाया जाता है। लोग बिना किसी अशुभ चिंतन किये एंव बिना किसी हिचक के बगैर पंचाग शुद्धि के इसे मान्यता देते है।

विवाह आदि समस्त मांगलिक कार्य बंसत पंचमी के दिन सम्पादित करना शुभ एंवसिद्धि प्रद होता है। चारों वर्णो के लोग तथा उनके पूर्वज इस मुहूर्त को बड़ी ही श्रद्धा और उंमग के साथ अपनाते आये हैं और सफल भी होते देखे गये है। हिंदू धर्म परम्परा से जुडे होने की बजह से इसका अति विशिष्ट महत्व है। यह सरस्वती पूजन का पर्व है। स्कंद पुराण के अनुसार श्री स्वरस्वती जी के मंदिर में विद्या दान करना पुण्य का कार्य माना गया है। मंदिरों में धर्मशास्त्र की पुस्तकों का दान किया जाता था।

विद्यालय वगैरहा सरस्वती के मंदिर होते है। अगर लोग चाहें तो स्वेच्छा से ऐसे स्थलों पर जाकर लेखन पठन साम्रगी जैसे पैन पेन्सिल कॉपी किताब बस्ता आदि को दान स्वरूप विद्यार्थियों के मध्य वितरण कर धर्म लाभ कमा सकते है। यदि यह शुभ कार्य सरस्वती पूजन के महान पर्व बंसत पंचमी के दिन करेंगे तो उनके पुण्य की प्रभा और अधिक चमकने लगेगी।

सरस्वती पूजन पर्व के दिन शारदा देवी या सरस्वती देवी के मन्दिर में वीणा या सितार का दान करने से संगीतज्ञों को गायन वादन की कला में निपुणता हासिल होने लगती है। संगीत प्रेमियों के अतिरिक्त अन्य पुण्यार्थी लोग सरस्वती जी के मंदिर में सरस्वती कवच, सरस्वती सहस्रनाम स्तोत्र व सरस्वती चालीसा इत्यादि की पोथियों का वितरण कर सरस्वती जी के कृपापात्र बन सकते है।

न्याय जगत से जुडे लोग यदि लोग यदि इस पर्व के दिन सरस्वती जी के मन्दिर में चांदी का बना हंस ज्ञानदात्री सरस्वती को प्रसाद आदि के साथ भेंट करते है। तो दाहिने हाथ से किये गये ऐसे कर्म या पुरूषार्थ से सफलतायें उन्हें बायें हाथ में रखी हुई प्रतीत होने लगती है। वे सरस्वती जी के कृपा पात्र बन जाते है। ऐसे भक्त जातक न्याय विद्या में पारंगत हो जाते है और यशस्वी होते है। ऐसे लोगों को सतत छह मास तक सरस्वती जी की पूजा आराधना स्तुति पाठ करते हुए प्रसन्न रहना चाहियें। न्याय के क्षेत्र से जुड़े हुऐ लोग यदि बसंत पंचमी के दिन असली प्राकृतिक मोतियों की माला सरस्वती को अंलकरण हेतु अर्पित की जाये तो उसके लिये विजय के द्वार खुल जाते है।

शिक्षा जगत से जुडे लोग यदि सरस्वती जंयती के दिन यदि मंदिर में भगवती सरस्वती को श्वेत वस्त्रालंकार धारण कराते है। तो उनके कार्य व्यवसाय से जुड़ी हर दिशा उनके लिये हितकारिणी बन जाती है।

इस पावन पर्व पर सरस्वती जी को मुकुट छत्र और ध्वजा भेंट करने से श्रेष्ठतम् फल की प्राप्ति होती है। अज्ञान अंधकार दूर होता है। माघ शुक्ल पंचमी को श्री पंचमी भी कहते है। बसंत पंचमी के दिन सरस्वती पूजन के अतिरिक्त कामदेव एंव रति का पूजन करने से गृहस्थ जीवन सुखमय बना रहा है यह पर्व भगवान शंकर और पार्वती जी के पूजन अर्चन से भी जुडा है जगह पर शिवालयों में मेले भी लगते है। इस तरह से हम यह पाते है कि देव कार्य मंगल कार्य इत्यादि प्रत्येक शुभ कार्यो के लिये बंसत पंचमी की तिथि अपने आप में अति विशिष्ट महत्व को संजोय रहती है।

माघ शुक्ल पंचमी को श्री पंचमी भी कहते है। इस दिन विद्या बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती जी की जयन्ती मनाई जाती है। उत्तम विद्या और बुद्धि की कामना लेकर लोग उनका षोडशापचार दशोपचार अथवा मात्र पंचोपचार विधि से पूजन करते है। इस दिन पूर्वाभिमुख होकर श्वेत वस्त्र धारण कर निम्न मंत्र का 11 माला जप

शेष पेज 19 पर.....

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

शून्य मुद्रा

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य एवं
कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

प्राचीन काल में मुद्राओं का विज्ञान बडा ही गूढ विषय था, जिसे हमारे ऋषि मुनियों और संतो ने गुप्त रखा था। इन रहस्यों और विज्ञानों को जनसामान्य तक पहुंचाने और इसके प्रति जागरूकता लाने के लिये हमारे ज्ञानी ऋषि मुनियों और संतो ने सूत्र और ऋचाओं में लिखकर रख दिया है। यही कारण है कि सामान्य लोगो तक मुद्रा विज्ञान का अद्भुत चमत्कार नहीं पाया जाता है।

विधि- शून्य मुद्रा करने के लिये मध्यम अंगुली को मोड़कर, अंगूठे के अग्र भाग से लगाकर हल्का दबाकर रखने से शून्य मुद्रा बन जाती है। यह मुद्रा सिद्धासन, सुखासन, पद्मासन आदि आसनों में से किसी में भी बैठकर की जा सकती है। यह मुद्रा प्रातः व सायं काल की जाती है।

लाभ- इस मुद्रा के करने से कान का बहना, कान दर्द, बहरायन आदि समस्याओं में लाभ मिलता है। न्यूनतम यह मुद्रा एक घंटा तक करने से लाभ प्राप्त होता है। इन समस्याओं के अतिरिक्त यह मुद्रा अन्य समस्याओं में भी लाभ देती है जैसे अस्थियों की कमजोरी, ह्रदय रोग, गले के रोग व थायराइड, मसूडों की पकड आदि समस्याओं में शून्य मुद्रा लाभ देती है।

सावधानियाँ- यह मुद्रा स्वस्थ होने पर ही करें। गर्मी मे अधिक न करें।

❋ ❋ ❋

कालसर्प योग शान्ति हेतु मिलें

8 मार्च 2016 को महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन द्वारा श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम पर कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराने चाहते है वह अपना नाम नीचे लिखे हुये मो. न. पर फोन कर के पंजीकृत अवश्य करा लें।

मो. 9719666777, 9837966404, 9319221203

गौ माता

मोहिनी पाराशर
आगरा

वेदों शास्त्रों में गौ महिमा कई प्रकार से तथा कई बार करी है। जिसका अनुसरण तथा प्रचार स्वयं भगवानों ने भी किया है। किंतु वर्तमान समय में विदेशी संस्कृति मनुष्य पर हावी हो गयी है। जिसके कारण वह भारतीय संस्कृति शास्त्रों पुराणों के ज्ञान से दूर होती जा रहा है तथा गौ ब्राहमण आदि के प्रति नैतिक सामाजिक शास्त्रीय धार्मिक मानव बुद्धि का ह्रास आज के मनुष्य में हो रहा है। गौ से प्राप्त वस्तु अमृत है। जिसका गुणगान हमारे ऋषि मुनि वर्षो से करते आ रहे है। आज भौतिक युग में विज्ञान की सहायता

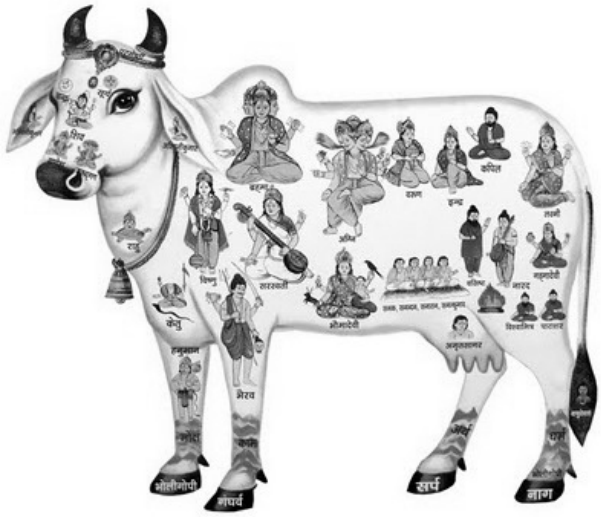

से गौ से प्राप्त अमृत को दवाओं आदि में प्रयोग लाया जा रहा है। जिसे प्रयोग में लाकर मनुष्य शारीरिक ही नहीं आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर रहा है।

सासारिक माँ अपने बच्चे को अधिक से अधिक एक वर्ष तक दुग्ध पान कराती होगी परन्तु देव माता गौ जीवन भर अपने दुग्ध से हमे बलशाली व बुद्धिमान बनाती है। सिर्फ उदर शांति ही नहीं वह अपने मूत्र द्वारा हजारों रोगो का नाश भी करती है तथा गौ का गोबर हमें कई प्राकृतिक आपदाओ से बचाता है तथा वह हमारें कई भोजन को सिद्ध करने में ईधन के काम भी आता है और विज्ञान सिद्ध कर चुका है कि कृषि के लिए देशी गाय के गोबर से बनी खाद सर्वोत्तम है।

विष्णु स्मृति के अनुसार

गौमूत्र गौमयं सर्पि: क्षीर दधि च रोचना ।
षडङमेतत् परमं मगल्यं सर्वदा गवाम्।।

शेष पेज 19 पर.....

श्री कृष्ण के गृह क्षेत्र आगरा के राज गहरे
(सीक्रेटस ऑफ आगरा)

सुरेश अग्रवाल
आगरा

हमारा आगरा सिर्फ एक नगर ही नहीं वरन् कभी समृद्धशाली प्रान्त था। कभी शूरसेन प्रदेश तो कभी जामप्रस्थ। इतना ही नहीं अर्गलपुर अंगरी अग्रबन की लम्बी फेहरिस्त इसके इतिहास के पृष्ठो में दर्ज है। वक्त के साथ इसके नाम बदले तो नई पहचान भी मिली। महाभारत कालीन कामिक्य वन, कामा सैकरिक्य वन, फतेहपुर सीकरी मधुवन और भरतपुर केवला देव वन को मिलाकर आगरा को सैक प्रदेश कहा जाता था, जिसका अर्थ है जल प्लावित क्षेत्र। आगरा के रूप में जिस सैक प्रदेश का जिक्र महाभारत में मिलता है वह अति विकसित और जल आच्छादित क्षेत्र था। खुदाई में निकले शैव मंदिरों से इस तथ्य की पुष्टि होती है। बाह क्षेत्र के औंधा टीला और पुराना टीला नामक स्थान पर अति प्राचीन पार्वती का मंन्दिर और कई जैन मन्दिरों के भी अनेक प्रमाणिक अवशेष मिले है।

विख्यात इतिहासकार हैमिल्टन ने लिखा है कि आगरा को परशुराम की नगरी के रूप में जाना जाता है। मुस्लिम इतिहासकार अब्दुल्ला ने अपनी पुस्तक तारीकी दाउदी में लिखा है कि मथुरा के राजा कंस के समय में आगरा एक समृद्धशाली नगर था। जैन ग्रन्थों के अनुसार बटेश्वर श्री कृष्ण के पितामह शूरसेन का प्रदेश था। इतिहासकार वैन्स आगरा को बयाना के राजा वाणा द्वारा बसाया गया मानते है जिसे उसने अपने पिता जामराज की स्मृति में बसाया था इसी कारण आगरा को जामप्रस्थ कहा जा ता था। इतिहासकार टॉड ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि आगरा क्षेत्र अग्रवन था तथा अग्रगामी आर्यो की राजधानी था। अग्रगामियों के राजा का नाम अग्रराज था, उसी के नाम से इसे अंगरी देश कहा जाने लगा।

जैसा कि शास्त्रों में वर्णन किया गया है। कि श्री कृष्ण के पिता वासुदेव और पितामह शूरसेन वटेश्वर के निवासी थे, इसलिये श्री कृष्ण का गृह क्षेत्र आगरा होना प्रमाणित है। कृष्ण का जन्म अपने मामा कंस के राज्य मथुरा स्थित कारागार में हुआ था। इनके पूर्वज यदु की सन्तान होने के कारण यदुवंशी कहे जाते है। सन् 625 में भारत आये चीनी यात्री श्यूयानचउंग ने अपनी भारत यात्रा के वर्णन में कंस के राज्य का विस्तार 833 मील बताया था। मुस्लिम इतिहासकार अब्दुल्ला ने लिखा है कि कंस का आगरा में एक किला था। जिसकी पुष्टि गोकुलपुरा में स्थित कंस दरवाजे से होती है।

अनेक प्राचीन ग्रन्थों में आगरा को अर्गलपुर लिखा गया है। महर्षि अंगिरा की तपोभूमि होने के कारण आगरा उनके नाम पर भी बसा होना सम्भव है। अर्जुन के पौत्र परीक्षित के पुत्रों में से एक का नाम अग्रसेन था कई राज्यों की सीमाओं से जुडा होने के कारण यह नगर व्यापार संवर्धन की दृष्टि से उपयोगी और सुगम रहा होगा, इसलिये महाराजा अग्रसेन की कर्मभूमि के रूप में आगरा के नाम से जाना जाने लगा। फिरोजाबाद स्थित अटा वाला मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति के नीचे अग्रसंवत शब्द लिखा हुआ है। चूँकि उस समय अग्रसंवत ही चलता था। इस मंदिर का निर्माण चन्दवार के अग्रवंशजों ने कराया था। कुछ दशकों पूर्व तक फिरोजाबाद आगरा जनपद में ही शामिल था।

आगरा का इतिहास अध्ययन का विषय है। लेकिन आगरा में स्थित ताजमहल विश्व में भारत की पहचान बन गया हैं आगरा वासियों के लिये यह गौरव का विषय है। दूसरा पहलू यह भी है कि **यदि ताजमहल विश्व के किसी अन्य शहर में होता तो वह विश्व का सबसे समृद्ध शहर होता ।** इस मुद्दे पर हम सभी को गम्भीर चिन्तन करना होगा। ❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के **समाधान** की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

अपवाद और अनुभव योग- ज्योतिषीय उपयोगिता

कस्तूर चन्द जैन
चार्टर्ड अकाउन्टेंट
आगरा

ज्योतिषीय उपयोगिता तभी अनुभव में प्रतीत होती है जब जातक को जीवन में राजयोग सम्बन्धित दशायें चलती है। नहीं तो ज्योतिषीय उपयोगिता का कोई जातक को लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है, चाहें बेशक जातक की जन्मपत्र में कितने ही प्रबल राजयोग तथा चन्द्रादि व लग्नादि योग जातक की जन्मपत्र में पायें जावें। यहां पर मैं दो जन्मपत्रियां देने जा रहा हूँ जिनसे आपकों स्पष्ट हो जायेगां–

जन्म तारीख 28–04–1960 सूर्य दशा एक वर्ष 11 माह 12 दिन शेष

जन्मांक

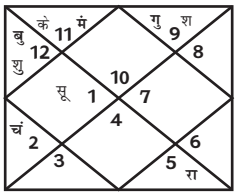

नवमांश

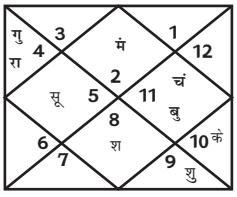

आप देखियें:– 1 शुक्र दशमेश पंचमेश उच्च राशि में स्थिति है जो योगकारी है जिस पर कोई पाप प्रभाव भी नहीं है

2. सप्तमेश चन्द्र उच्च राशि में स्थिति है जिस पर भी कोई पाप प्रभाव नहीं है मंगल की दृष्टि है।

3. सूर्य अष्ठमेश उच्च राशि में स्थिति है जिस पर गुरू की दृष्टि है। राहु की भी दृष्टि है।

4. गुरू स्वराशि में स्थिति होकर नवमांश में उच्च राशि में स्थिति है।

इसके अलावा नवमेश व दशमेश बुध–शुक्र तृतीया स्थान पर स्थिति होकर भाग्य स्थान पर पूर्ण दृष्टि है। बुध नीच राशि में है किन्तु नीच भंग राजयोग की दृष्टि शुक्र के उच्च होने से प्राप्त हो

शेष पेज 19 पर.....

नामकरण संस्कार

नाम न सिर्फ हमारी पहचान बताता है बल्कि यह हमारे व्यक्तित्व, स्वभाव, बर्ताव और भविष्य पर भी प्रभाव डालता है। नाम के इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए हिन्दू धर्म मे नामकरण संस्कार की व्यवस्था की गई है।

नामकरण संस्कार हिन्दू धर्म का एक अहम संस्कार है। पाराशर स्मृति के अनुसार नामकरण संस्कार जातक के सूतक व्यतीत होने के बाद करना चाहिये। नामकरण के विषय में कई वेदों पुराणों में भी वर्णन है।

भविष्यपुराण के अनुसार लड़कों का नाम रखते समय कुछ विशेष बातों का अवश्य ध्यान रखना चहिए जैसेः

1. ब्राह्मण वर्ग के बालक का नाम मंगलवाचक होना चाहिये।

2. क्षत्रिय वर्ग में बालक का नाम बलवाचक होना चाहिये।

3. वैश्य वर्ग में बालक का नाम धनवर्धक होना चाहिये।

4. शूद्र वर्ग में बालक का नाम यथाविधि देवदासादि नाम होना चाहिये।

इसी प्रकार, लडकियों के नाम रखते हुए निम्न बातों का ख्याल रखना चाहिये।

लडकियों का नाम मंगलसूचक होना चाहिये। ऐसा नाम नहीं रखना चाहिये जिसका अर्थ ना निकलता हो या जिसके उच्चारण से कष्ट हो। ऐसा नाम भी नहीं रखने चाहिये जिनसे क्रूरता या युद्ध आदि का भाव आए।

भविष्यपुराण के अतिरिक्त नारदपुराण में भी शिशु के नामकरण संस्कार के लिये कई बाते बताई गई है जो निम्न है।

ऐसा नाम नहीं रखना चाहिये जो स्पष्ट न हो, जिसका अर्थ न बनता हो, जिसमें अधिक गुरू अक्षर आते हों।

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के **समाधान** की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

ज्योतिष से करें शिक्षा क्षेत्र का चुनाव

अजय दत्ता
ज्योतिष भूषण, वास्तु रत्न
आगरा

बौद्धिक विकास एंव शिक्षा एक दूसरे के पूरक है। इसके लिये विवेक शक्ति, बुद्धि, प्रतिभा व स्मरण शक्ति तथा विद्या पर विचार करने की आवश्यकता होगी। ज्योतिष में सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार शिक्षा का विचार तृतीय एंव पंचम भाव से किया जाता है। जातक परिजात के अनुसार चतुर्थ एंव पंचम भावों से शिक्षा का विचार करते है। फलदीपिका में लग्नेश, पंचम भाव और पंचमेश के साथ ही चंद्रम, बृहस्पति एंव बुध को शिक्षा का कारक बताया गया है।

चंद्रमा लग्न स्वरूप मन का कारक है। बृहस्पति ज्ञान का नैसर्गिक कारक है। जबकि बुध विवेक शक्ति बुद्धि, स्मरण शक्ति का कारक है। इसके अतिरिक्त शिक्षा प्राप्त करने के लिये स्वस्थ तन की भी आवश्यकता है। यदि इनके साथ साथ विद्या बुद्धि स्मरण शक्ति, विविध शिक्षा योगों का अध्ययन करें तो सभी बातें स्वतः ही स्पष्ट हो जायेगी।

शिक्षा का योग :– बृहस्पति उच्च का हो कर पांचवें स्थान को देखता हों। बुध उच्च का हो। पंचमेश बली हो कर 1,4,5 भावों में हों। पंचमेश केंद्र या त्रिकोण में हों। नवमेश केंद्र या त्रिकोण में हो। द्वितीयेश एंव वृहस्पति त्रिकोण में हों। दशमेश लग्न में हों। बृहस्पति और चंद्र में राशि परिवर्तन योग हों। बृहस्पति और बुध की युति या दृष्टि संबंध हो। बृहस्पति, बुध एंव शुक्र केंद्र या त्रिकोण में हो। चंद्र से त्रिकोण में बृहस्पति एंव बुध से त्रिकोण में मंगल हों।

विद्वान योगः– बुध सूर्य के साथ अपने घर में हों। लग्न में मंगल हो चतुर्थ स्थान में सूर्य एंव बुध हों तथा दशम भाव में शनि और चंद्रमा हों, तो जातक विद्वान होता है।

गणितज्ञ योगः– शनि बुध ग्यारहवें भाव में हो। लग्न में बृहस्पति एंव अष्टम भाव में शनि हों। लग्न से दूसरे, तीसरे या पांचवे भाव में केतु और बृहस्पति हों। धन भाव में मंगल हो और शुभ ग्रहों की उस पर दृष्टि हों। बृहस्पति केंद्र और त्रिकोण में हों। शुक्र मीन का हो एंव बुध धनेश हो। मंगल और चंद्र दूसरे भाव में हों तथा केद्रं में बुध स्थित हों।

चिकित्सक योगः– सूर्य औषधियों का कारक है। मंगल रक्त का कारक है। शनि अस्थियों चर्म तथा मृत शरीर का कारक है। दशम भाव व्यवसाय, एकादश आय एंव द्वितीय भाव विद्या एंव धन के है। यदि उपर्युक्त ग्रहों का संबंध संबंधित भावों से हो, तो जातक चिकित्सा शिक्षा ग्रहण करता है। केद्र में मंगल हो और शुक्र द्वारा दृष्ट हों। केतु और बृहस्पति की युति हो। शुक्र चंद्र की युति दशम भाव में हो और सूर्य की उन पर दृष्टि हो।

इंजीनियर योगः– सूर्य और बुध की युति केंद्र या त्रिकोण में हो। शनि पंचम भाव में हो और बुध एकादश में हो। राहु मंगल की युति केंद्र या त्रिकोण में हो। शनि एंव मंगल की युति या दृष्टि संबंध हो। शुक्र बली हो। उस पर मंगल शनि या बृहस्पति की दृष्टि हों। शनि मंगल की युति एंव केद्र में बृहस्पति हो।

अभिनेता का योग : शुक्र स्वराशि का हो कर केद्र या त्रिकोण में हो। शुक्र स्वराशि का हो कर केद्र या त्रिकोण में हो। बुध और शुक्र की युति हो। बुध चंद्रमा के नवांश में हो औश्र सूर्य द्वारा दृष्ट हो। शुक्र एंव बुध लग्नेश से युत हों तथा भाव बली हों। वृषभ या तुला लग्नेश से युत हो। तथा भाव वली हों। बुध कर्क राशि में हो तथा उस पर चंद्रमा या शुक्र की दृष्टि हो। चंद्र और शुक्र में पारस्परिक युति या दृष्टि हो।

पत्रकारिता का योग : बली बृहस्पति या बुध दशम भाव में हो। स्वराशि का बुध या बृहस्पति केंद्र या त्रिकोण में हो। शुक्र पर बृहस्पति की दृष्टि या युति। चंद्रमा गुरू और शुक्र परस्पर त्रिकोण में हों।

अध्यापक के योग : पंचमेश बली हो कर केद्र में स्थित हो। बुध स्वराशि का हो एंव उस पर बृहस्पति की दृष्टि या युति हों। शुक्र एंव बृहस्पति की युति केंद्र या त्रिकोण में हो। बृहस्पति एंव मंगल की युति या दृष्टि हों। बृहस्पति एंव चंद्र की युति या दृष्टि हों।

आध्यात्मिक योग : एकादश स्थान में शनि हो। दशम स्थान में मीन राशि का मंगल या बुध हो। नवमेश स्वग्रही हो। दशमाधिति नवम में हो और बलवान नवमेश बृहस्पति या शुक्र से युक्त या दृष्ट हो। लग्नेश दशम स्थान में और दशमेश नवम स्थान में हों तथा उस पर पाप ग्रह का दृष्टि एंव दशमेश शुभ ग्रह के नवमांश में हो।

ज्योतिषी योग : बुध केंद्र में हो, द्वितीयेश बली हो, या शुक्र दूसरे भाव में हों। केंद्र या त्रिकोण में बुध एंव बृहस्पति की युति।❋❋

सरस्वती प्रयोग में सफलता

भगवती सरस्वती देवी विद्या, बुद्धि, मेधा, तर्कशक्ति एंव समस्त ज्ञान विज्ञान की अधिष्ठात्री शक्ति है। इन्हें महास्वरस्वती नील सरस्वती आदि नामों से जाना जाता है। हमारे ग्रथों में अनादि काल से अनेक नाम रूपों से इनकी उपासना पद्धतियां प्रचलित रही है। वेदों तथा आगम ग्रंथों में सरस्वती की उपासना से संबंधित अनेक मंत्र स्तोत भरे हुए है। उनमें सरस्वती रहस्योपनिषद शारदा तिलक आदि ग्रंथ विशेष रूप से महत्व रखते है। यहां सरस्वती देवी की कृपा प्राप्ति हेतु सरल मंत्र विद्यार्थी वर्ग के लाभार्थ दिये जा रहे है।

सरस्वती मंत्र : ऐं सरस्वत्यै नमः मंत्र का रोजाना 1 माला हरे हकीक की माला से जाप करें एवं एकाग्रता की वृद्धि व स्मरण शक्ति हेतु सिद्ध श्री सरस्वती रक्षा कवच धारण करें।

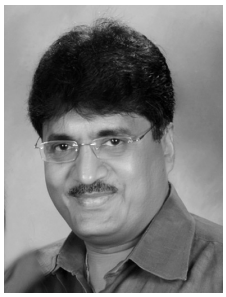

जरूरत है सक्षम एंव सफल राजनैतिक नेतृत्व की

ललित गर्ग
दिल्ली

नये वर्ष की शुरूआत के साथ ही राजनीति के लिये शुभ और मंगलकारी होने की ज्यादा जरूरत है। इसके लिये एक ऐसे राजनीतिक उभार एंव प्रभावी राजनीति नेतृत्व की जरूरत तीव्रता से महसूस की जा रही है क्योकि राजनीतिक की दूषित हवाओं ने स्वार्थों की धमाचौकड़ी मचा रखी है। एक ईमानदार और सक्षम नेतृत्व की तलाश जारी है। यह तलाश राजनीति के लिये ही नहीं धर्म, अर्थ, समाज , शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सभी क्षेत्रो के लिये अपेक्षित है। वर्ष 2014 में नरेन्द्र मोदी के राष्ट्रीय राजनीति को एक नई दिशा दी है। लेकिन एक मोदी से देश के सफल और सक्षम नेतृत्व की पूर्ति संभव नहीं है। वर्ष 2016 में चारं पांच महत्वपूर्ण राज्यों में चुनाव होने है और इन चुनावों में प्रभावी एंव सक्षम राजनीति नेतृत्व उभरना जरूरी है।

ज्योतिष❖, वास्तुशास्त्र एवं
अंकशास्त्र सीखना हुआ
अब बहुत ही आसान।
सीखें अब मात्र 3 महीने में।
बैच अप्रैल 2016 से प्रारम्भ

इस साल पूर्वोत्तर के असम के बाद पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु पांडिचेरी और फिर केरल और इसके बाद उत्तर प्रदेश में चुनाव होने है। देश की सबसे बड़ी पार्टी गिनी जाने वाली कांग्रेस ने काफी कुछ खो दिया है। वाम दल काफी पिछड़ चुके है। समाजवादी पार्टी एंव बहुजन समाजवादी पार्टी पर नजरें टिकी है। बिहार में महागठबंधन की सफलता के बाद नीतिश कुमार और ममता बनर्जी भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेंगें। लेकिन इस कथित या संभावित तीसरे मोर्चे की राजनीति को भी वर्ष के चुनावों में गंभीर किस्म की परीक्षा से गुजरना होगा। लेकिन प्रश्न है कि क्या इस वर्ष के चुनाव देश को कोई सक्षम एंव सफल राजनीतिक नेतृत्व दे पायेंगें। यह सवाल हमें बार बार झकझोरता है और इस वर्ष भी एक चुनौती बन कर खड़ा है। सभी कहते है देश में इतनी गड़बड़ी है राजनीति दूषित होती जा रही है। बढ़ती मंहगाई, गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, प्रदूषण और आर्थिक अनियमितताओं जैसे मुदो पर तो हमेशा ही सत्ता का और प्रजा का संघर्ष चलता रहा है। मगर हम यह भूल गए कि हमारे बीच करोडों ऐसे दिमाग है और करोडों ऐसे हाथ है जिनमें देश को नई दिशा देने की क्षमता है, मौलिक चिन्तन है, पुरूषार्थी संकल्प है। ऐसे लोगों में नीतियों एंव निर्णयों को सार्थक बनाने की क्षमता है। बस उन्हें राजनीतिक उभार की जरूरत है। यह कहकर कि अब बडे लीडर नहीं या सक्षम राजनीतिक नेतृत्व नहीं रहा, हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाने की पलायनवादी मानसिकता को ही दर्शाता है। हमारा देश या प्रदेश तरक्की नहीं कर रहा क्योकि लीडरशिप खराब है। देश को चलाने वालों में लीडर शिप की क्वालिटी नहीं है। घर में अव्यवस्था है, क्योकि उसका मुखिया काबिल नहीं है। एक ठीक सा आदमी इन सब गड़बड़ियों को दूर कर सकता है। जरूरत उस आदमी को आगे लाने की है और संभवत इस बर्ष के चुनावों में यह प्रयत्न होना ही चाहिए।

हमारी सोच ही कुंद हो गयी है तभी तो हम किसी ऐसे अवतारी पुरूष से उम्मीद लगाए रहते है जो भ्रष्टाचार और ऐसी ही विसंगतियों से हमें निजात दिलाएं। कांग्रेस के लोग अपने युवराज से चमत्कार की उम्मीद करते हैं तो कुछ लोग अखिलेश में नई उम्मीदों खोज रहे है। किसी को जयललिता में तो किसी को ममता बनर्जी में देश का भावी नेतृत्व दिखाई दे रहा है। अगर हाशिए पर लगने के बाबजूद वामदल और एयूडीएफ एजीपी, डीएमके ,एआईएडीएमके, टीएमसी जैसे दल ज्यादा ताकतवर होकर उभरे तो तीसरे मोर्चे के मजबूत होते जाने और काग्रेस के मजबूर होकर उसकी चाकरी करने वाली स्थिति आएगी। इन्हीं दृष्टियों से हम भटक रहे है। देश भौतिक समृद्धि बटोरकर भी न जाने कितनी रिक्तताओं की पीड़ा सह रहा है। गरीब अभाव से तड़प रहा है। तो अमीर अतृप्ति से। कहीं अतिभाव कहीं अभाव। जीवन वैषम्य कहां बांट पाया अपनों के बीच अपनापन। अटालिकाएं खड़ी हो रही है, बस्तियां बस रही है मगर आदमी उजड़ता जा रहा है। पूरे देश में मानवीय मूल्यों का ह्रास, राजनीति अपराध, भ्रष्टाचार, कालेधन की गर्मी, लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन, अन्याय, शोषण, संग्रह, झूठ, चोरी जैसे अनैतिक अपराध पनपें है। धर्म, जाति, राजनीति, सत्ता और प्रांत के नाम पर नए संदर्भों में समस्याओं ने पंख फैलाये है। हर साल आप हम सभी अपने आपकों जीवन में जुडी अंतहीन समस्याओं के कटघरे में खड़ा पाते है। कहा नहीं जा सकता है कि इस अदालत में कहां कौन दोषी है पर यह चिंतनीय प्रश्न अवश्य है हम इतने उदासीन एंव लापरवाह कैसें हो गये कि राजनीति को इतना आपराधिक होने दिया। जब आपके द्वार की सीढियां मैली है तो अपने पडौसी की छत पर गन्दगी का उलाहना मत दीजिये। कोई भी अच्छी शुरूआत सबसे पहले स्वयं से ही की जानी जरूरी है। राजनीतिक नेतृत्व के मुदें पर हमें गंभीर होना ही होगा।

शेष पेज 18 पर.....

जो होता है अच्छे के लिए होता है।

रामा गुप्ता
आगरा

प्रायः आपने ये वाक्य कई बार सुना होगा। हमेशा लोग इसे किसी को सांत्वना देने के लिए या किसी को धैर्य दिलाने के लिए कहते है। परन्तु आज हम एक कथा द्वारा इसकी फिर से पुष्टि करते है। बात ईसा से 200 वर्ष पूर्व की है। भगवान ने एक बार अपने दूत को बुलाया और कहा मिस्त्र के जंगल में एक गरीब बेसहारा महिला जो अभी दो कन्याओं को जन्म देने वाली है, तुम जाओं और प्रसव के बाद उसके प्राण हर लों।

आज्ञा पाकर दूत चला, जब बो उस स्थान पर पहुँचा तो उसको ये कुछ ठीक न लगा कि दो नवजात कन्यओं से उनकी मां को छीन लें। वो वापस आकर ईश्वर के चरणों में गिर गया। उसने कहा ''भगवान ये पाप मुझसे न होगा।'' ऐसा वाक्य सुनकर ईश्वर क्रोधित हुए और उन्होने उसी क्षण उस कार्य के लिए दूसरे दूत को भेज दिया। पहले देवदूत ने फिर ईश्वर से प्रश्न किया।

तब ईश्वर ने उससे कहा कि जो होता है हर मनुष्य के अच्छाई के लिए होता है। पर वह देवदूत नहीं माना और तर्क वितर्क करने लगा। क्रोधित हो ईश्वर ने उसको सजा सुनाई। ईश्वर ने कहा कि अब तुम धरती पर रहोगे। तुम्हारे लिए यहाँ देवलोग में कोई स्थान नहीं है। देवदूत ने क्षमा याचना की परन्तु भगवान ने कहा कि तुमको सन्देह है विधि के लिखे पर तुमको सन्देह है कि हम ईश्वर किसी मनुष्य का अहित करेंगें। तो जाओं अब तुम धरती पर रहना और तुमको क्षमा तब मिलेगी जब तुम जान लोगे कि तुम गलत थे। उसके पूछने पर प्रभु ने कहा कि तुमको धरती पर तब तक रहना होगा जब तक तुमको तीन बार बहुत जोर जोर से हँसी नहीं आती और धरती पर तुम एक साधारण मनुष्य की तरह जीवन यापन करोंगे। तुम्हारी शक्तियाँ छीन ली गई हैं

ऐसा कहकर उसको धरती पर एक ऐसे स्थान पर भेज दिया जो उसी प्रान्त के पास था, जहाँ उसको पहले कार्य करने भेजा था। वहाँ जंगल में बहुत ठंड थी और बर्फबारी भी हो रही थी। वह बहुत कांप रहा था। उससे इतनी ठंड सहन न हो रही थी। तभी वहां से एक आदमी गुजरा जिसने एक फटा हुआ कोट और स्वैटर पहना था। उस आदमी ने देवदूत से कहा यदि तुमको ठंड लग रही हैं तो लो मेरा कोर्ट पहन लों मेरा स्वेटर भी ले लो। उस निर्धन व्यक्ति की बात सुनकर देवदूत को बहुत हंसी आई और उसने कहा कि यदि तुम मुझे अपने गर्म कपड़े दोगे तो तुम क्या पहनोगें?

निर्धन आदमी ने कहा तुम पहन लो मुझे तो ऐसे जीने की आदत हैं। देवदूत उस आदमी के साथ उसके घर चला गया। वह जूते बनाने का काम करता था। उसने देवदूत को अपने साथ काम पर रख लिया। और अब वह साथ रहने लगे। वक्त बीतता गया और कई बर्ष बीत गये। देवदूत विचार करता था कि कब उसको उसकी शक्तियाँ वापस मिलेंगी?

एक दिन उस व्यक्ति को राजा के जूते बनाने का कार्य मिला। किसी काम से उसे शहर जाना पड़ा। वह जूते बनाने का काम देवदूत को देकर चला गया। परन्तु देवदूत ने अपने पिछले जीवन के ख्यालों में खोते हुए जूतों की जगह चप्पल बना दी। चप्पल सुन्दर और अच्छी बनी थी।

जब वह व्यक्ति शहर से वापस आया तो उसने चप्पल देखकर बहुत शोक किया और रोने लगा। देवदूत ने उससे पूछा तो उसने बताया कि वहाँ के रीति रिवाज अनुसार राजा को मरने के उपरान्त चप्पल पहनाते हैं। तभी दरवाजे पर दस्तक हुई राजा के दूत द्वार पर थे। उनको देखकर वे दोनों शोकातुर हो रोने लगे। तभी सिपाहियों ने बताया कि अचानक किसी रोग की बजह से राजा की मृत्यु हो गई है। और अब जूते नहीं चप्पल बनानी होगी। उनका वाक्य सुनकर वे दोनों बहुत प्रसन्न हुए और देवदूत को दूसरी बार खूब हंसी आई। थोड़े समय बाद यह समाचार मिलाकि राजा की कन्याओं कि शादी है। उनके पास जूते बनाने का काम आया। देवदूत की अपने साथी से बात के दौरान ज्ञात हुआ कि राजा की खुद की कोई संतान न थी। फिर उसके पूछने पर उस व्यक्ति में बताया कि राजा को ये दो बेटियाँ उसको जंगल में मिली थी। जन्म के बाद उनकी माँ मर गई थी। राजा उनको अपने साथ ले आया और अब इन राजकुमारियों की शादी भी जापान के प्रान्त के राजकुमारों से हो रही है। देवदूत को यह बात जानकर फिर से खूब हंसी आई। और वह समझ गया कि ईश्वर हमारे प्रभू कभी गलत नहीं करते। हर इंसान के जन्म के साथ ही उसकी जीवन की पूरी योजना तय होती है। उसको अपनी गलती का अहसास हो गया। और भगवान पर अटूट विश्वास। इस तरह तीसरी बार हंसते ही उसकी शक्तियां वापस मिल गई । उसने अपने साथी को बहुत सा धन विद्या ली। उसके बाद वह व्यक्ति आनन्दपूर्वक जीवनयापन करने लगा। ❋❋❋

कालसर्प योग शान्ति हेतु मिलें

8 मार्च 2016 को महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन द्वारा श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम पर कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराने चाहते है वह अपना नाम नीचे लिखे हुये मो. न. पर फोन कर के पंजीकृत अवश्य करा लें।

मो. 9719666777, 9837966404, 9319221203

सेवंई घेवर
(रेसेपी न. - 3)

शुभी गुप्ता
आगरा

सामग्री

सेवई (बारीक भुनी हुई)–	250 ग्राम
मावा (खोआ)–	200 ग्राम
चीनी –	1/2 tsp
इलायची पाउडर –	4 Tbsp
मेवे –	2 Tbsp
देसी घी–	1/2 tsp
केसर दूध–	2 tbsp

विधि– एक पैन में घी गर्म करें। अब इसमें सेवई डालकर अच्छी तरह मिलाएं। एक दूसरे पैन में मावा डालकर भूने जब तक हल्का गुलाबी न हो जाए। अब इसमें चीनी डालें व चलाए। चीनी घुल जाने पर आँच बंद कर दें।

अब इसमें दूध में धुला हुआ केसर डालें और मिलायें। यदि मावा सूखा लग रहा हो तो एक Bowl पानी में डालें और अच्छे से मिलाए। इस मिश्रण में सेंवई डालें और पकाए। सेवई को पकाने के लिये अच्छे से मिलाए और जब यह कढाई का किनारा छोड़ने लगे तो आँच बंद कर दें।

अब एक छोटी थाली या केक टिन में घी से ग्रीस करें। इसमें बीच में एक उल्टा ग्लास खड़ा करें। फिर सेवई को डालें और अच्छे से खाली स्थान पर फैलाए और सेट करें। अब इसके ऊपर इलायची पाउडर छिडकें। मेवों से सजांए। थोडी देर या घंटा लगेगा, घेवर सेट होने में बीच में रखा ग्लास निकाल लें और अपने सेवई घेवर को काट कर सर्व करें और खुशियाँ बढ़ायें आनन्द उठायें।

मेवाड़ विश्वविद्यालय व अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ
के संयुक्त तत्वाधान में
ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति, आगरा
के अंतर्गत करें
4 वर्षीय इंटीग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.
आवश्यक शैक्षणिक योग्यता - स्नातक (ग्रेजुएशन)
अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

16 फरवरी - 15 मार्च

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–बहिनों का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस मास में गुप्त शत्रु से बचें। व्यवसाय ठीक रहेगा। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में हानि होने का भय रहेगा। प्रियजनों से मन-मुटाव होने की स्थिति बनेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। अपमान होने का भय रहेगा। शत्रु प्रबल रहेंगे।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट से निजात पाने की संभावना रहेगी। प्रियजन का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस मास में गुप्त शत्रु से बचें।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। अच्छे लोगों से मेल-जोल बढ़ेंगे। स्वास्थ्य खराब रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। लाभ होकर हानि का भय रहेगा। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे। सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। इस मास में शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। प्रियजन का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– घरेलू परेशानी लगी रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। योजनाओं से लाभ होगा। गुप्त शत्रु से बचें।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से बचें। नौकरी में बदलाव होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- माता को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कार्य में निरन्तर हानि होने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक तनाव से बचें।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– प्रियजनों का पूर्ण सूख प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में लाभ होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। पिता का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। नई योजनायें बनाने में सक्षम रहेंगे। योजनाओं से लाभ होगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची-मानसिक तनाव से बचें। प्रियजनों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। घरेलू परेशानी लगी रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। मास के अन्त में ठीक हो जायेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

फरवरी	मार्च
18.जया एकादशी व्रत **19**.भीष्म द्वादशी **20**.प्रदोष व्रत **22**.पूर्णिमा स्नान समाप्त, संत रविदास जंयती **26**.श्री गणेश चतुर्थी व्रत **28**.डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य तिथि	**2**.सीताष्टमी(जानकी जयंती) **3**.श्री राम दास जं. **4**.स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती **5**.विजयाएकादशी व्रत **6**.प्रदोष व्रत **8**.महाशिव रात्रि व्रत, विश्व महिला दिवस 9.फाल्गुनी अमावस्या **10**.फुलैरा दौज, **श्री** रामकृष्ण परमहंस जं. **12**.श्री विनायक चतुर्थी व्रत

गृहारम्भ मुहूर्त

फरवरी–17 **मार्च**– 10, 11

गृह प्रवेश मुहूर्त

फरवरी – 17, 20 **मार्च**– 10, 11

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

फरवरी – 17, 19, 20

मार्च–10,11,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

फरवरी – 17, 25, 26

मार्च– 7, 10, 11,

सर्वार्थ सिद्ध योग

फरवरी	मार्च
17 ता. सू.उ. से रात्रि 02:14 तक 19 ता. सू.उ. से रात्रि 02:58 तक 27 ता. सांय 06:28 से रात्रि अंत 06:40 तक	10 ता. सांय 06:19 से 11 ता. रात्रि अंत 06:25 तक 14 ता. प्रातः 09:27 से रात्रि अंत 06:24 तक

मासिक राशिफल

16 मार्च - 15 अप्रैल

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–व्यवसाय ठीक रहेगा। इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। व्यापार में धन हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं की वृद्धि होने की संभावना रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– यात्रा होना भी संभव है। अपमान होने का भय रहेगा। जीवनसाथी का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। भाइयों का सुख प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। परेशानी होने की संभावना रहेगी। योजनाओं से लाभ होगा। इस मास में आप शत्रुओं पर हावी रहेंगे।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि होने का भय रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें। रोग का भय रहेगा। चोट से बचें। आय के बराबर व्यय होगा। जमीन-जायदाद संबंधित परेशानी लगी रहेंगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। मास के अन्त में स्वास्थ्य अधिक खराब रहेगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। व्यर्थाविवाद से दूर रहें। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू–भाइयों का सुख प्राप्त होगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। पति-पत्नि के बीच वैचारिक मतभेद की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह मे धन की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा। यात्रा में कष्ट होना भी संभव है। रोग का भय रहेगा। पत्नि को लाभ की प्राप्ति होगी। कार्य से निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- कार्य से निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। पुत्र को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें। रोग का भय रहेगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आपके प्रियजनों या रिश्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यर्थाविवाद से दूर रहें। चोट से बचें। नौकरी अवश्य मिलेगी, प्रयासरत रहे।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मार्च	अप्रैल
16.दुर्गाष्टमी, होलिकाष्टक प्रा. **19**.आंवला एकादशी व्रत **20**.प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी 23.पूर्णिमा होलिका दहन **24**. धुलैड़ी (बसंत उत्सव) **27**.श्री गणेश चतुर्थी व्रत **28**.रंग पंचमी **30**.एक नाथ षष्ठी **31**.भानु सप्तमी पूजन	**1**.शीतलाष्टमी पूजन, मूर्ख दि, वि स्वास्थ्य दि. **4**.पापमोचनी एकादशी व्रत **5**.प्रदोष व्रत **7**. अमावस्या **8**. नवरात्रा प्रारम्भ **9**. द्वितीय नवरात्रा तृतीय नवरात्रा, गणगौर व्रत **10**.चतुर्थ नवरात्रा **11**. श्री पंचम **12**. स्कन्द षष्ठी **13**.भानु सप्तमी **14**. दुर्गाष्टमी व्रत, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जं. **15**. राम नवमी, स्वा. नारायण जं.

ग्रहारम्भ मुहूर्त
मार्च - नही हैं।
अप्रैल– नही है।
गृह प्रवेश मुहूर्त
मार्च – नही है।
अप्रैल– नहीं है।
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
मार्च – 16, 18, 19, 23, 24
अप्रैल – 14,
नामकरण संस्कार मुहूर्त
मार्च –18, 23, 25
अप्रैल– 3, 4, 7, 04, 08, 11, 13,

सर्वार्थ सिद्ध योग

मार्च	अप्रैल
16 ता. सू.उ. से 07:46 तक	08 ता. सू.उ. से रात्रि 11:20 तक
17 ता. प्रातः 07:51 से 18 ता. प्रातः 08:32 तक	11 ता. सू.उ. से रात्रि अंत 05:54 तक
23 ता. रात्रि 07:07 से रात्रि अंत 06:15 तक	14 ता. सू.उ. से रात्रि अंत 05:52 तक
26 ता. सू.उ. से रात्रि 04:12 तक	
28 ता. सू.उ. से रात्रि अंत 06:10 तक	

सबसे बड़ा मंत्र गायत्री मंत्र

हिन्दू धर्म में सबसे बड़ा मंत्र गायत्री मंत्र को कहा गया है। गायत्री मंत्र पूजा का सिर्फ एक साधन नहीं है बल्कि यह अपने आप में ही प्रभु की आराधना का माध्यम है। इस संसार में सूर्यदेव को एकमात्र दिखाई देने वाला देवता माना जाता है। भगवान सूर्य के महत्व को दर्शाने वाला गायत्री मंत्र निम्न है:

गायत्री मंत्र :

ऊँ भूर्भुवः स्व तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात।।

गायत्री मंत्र का अर्थः हिन्दू धर्म में गायत्री मंत्र को महामंत्र कहा गया है। भगवान सूर्य की स्तुति में गाए जाने वाले इस मंत्र का अर्थ निम्न है।

उस प्राणस्वरूप दुखनाशक, सुखमय, श्रेष्ठ तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्त करण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

कब करें गायत्री मंत्र का जाप इस बेहद सरल मंत्र को कभी भी पढा जा सकता है लेकिन शास्त्रों के अनुसार इसका दिन में तीन बार जप करना चहिये।

प्रातः काल सूर्योदय से पहले और सूर्योदर्य के पश्चात तक फिर शाम को सूर्यास्त के कुछ देर पहले जप शुरू करना चाहिए।

नाम का महत्व

नाम किसी मनुष्य की भौतिक पहचान के साथ साथ उसके आंतरिक गुणों और व्यवहार आदि का भी वर्णन करता है। हिन्दू धर्म में नाम रखते समय ग्रहों आदि की चाल का विशेष ख्याल रखा जाता है, ताकि जातक का नाम उसके स्वभाव व भविष्य के अनुकूल हो। इन सभी बातों के साथ नाम रखते हुए इस बात का भी ख्याल रखा जाता है कि बच्चे के नाम का अर्थ कुछ अटपटा ना हो। नाम रखते हुए माता पिता इस बात पर भी विशेष जोर देते हैं कि नाम का शुभ हो और वह उसके व्यक्तित्व को प्रदर्शित करें।

नाम और व्यवहार– हिन्दू धर्म के सिद्धांतो पर किये जा रहे शोधों से यह निष्कर्ष निकलता है कि नाम का हमारे व्यवहार से विशेष संबंध होता है। राम, रहीम, मोहन, आदि नाम वाले जातक आमतौर बेहद शांत स्वभाव वाले देखने को मिलते है। दूसरी तरफ कृष्ण भोले, कन्हैया आदि नाम के जातक में चुलबुली और शरारती प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

नाम और भविष्यफल– नाम न सिर्फ हमारे व्यक्तिव के विषय में जानकारी देता है बल्कि यह हमारे भविष्य का भी आइना होता है। अगर किसी जातक को अपना जन्म समय नहीं पता तो वह नाम के शुरूआती अक्षरों द्वारा अपना भविष्यफल जान सकता है। नाम से राशि जानने की पद्धति बेहद प्राचीन और सटीक मानी जाती है। साथ ही अंकज्योतिष के अनुसार नामांक पद्धति में भी नाम के आधार पर ही जातक का भविष्यफल बताया जाता है।

पाठकों के पत्र

पूज्य गुरू जी, प्रणाम

मैने अपनी रामबाग स्थित फैक्ट्री में आपसे वास्तु बिजिट करायी थी। आपने जो भी उपाय बतायें थे वह हमने किये और उससे हमें बहुत लाभ प्राप्त हुआ। अब हमें अच्छे आर्डर मिल रहें है। आपको कोटि कोटि धन्यवाद

जी. एस. अग्रवाल, आगरा

आदरणीय पारासर जी

आपकी दिसम्बर–जनवरी की भविष्य निर्णय पुस्तक मिली। सभी लेख अच्छे लगे। आपका लेख श्रापित योग–दोष बहुत अच्छा लगा। ईश्वर से प्रार्थना है आप ऐसे ही समाज का भला करते रहें। **पं. कृष्णकान्त शमा, मथुरा**

अमृत वचन

मनुष्य केवल भोक्ता नहीं है। वह दूसरों की भोग्य वस्तु भी है। यह परिवार, समाज, राष्ट्र, संस्थाएँ सब उसका भोग कर रही है। व अन्त में वह अग्नि की ही भोग्य वस्तु बन जाता है।

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न 1. मेरा व्यवसायिक कैरियर ठीक नहीं चल रहा है। उपाय बतायें।

पवन सिंघल, आगरा

उत्तर– आपकों शनि की सोढेसाती चल रही है। राहु की महादशा में शनि का प्रत्यन्तर चल रहा है। अगस्त 2017 तक का समय प्रतिकूल है। शनि की पूजा करे तथा एक पन्ना रत्न धारण करें। गले में सर्वकार्य सिद्धि लाकेट धारण करें। निश्चित लाभ होगा।

प्रश्न 2. मेरे पुत्र का मन पढाई में नहीं लग रहा है। सही मागदर्शन करें।

राधा बंसल, अलीगढ़

उत्तर– पुत्र की कुण्डली बहुत दूषित है। शिक्षा के अलावा उसका हर ओर ध्यान जायेगा। राहु के मंत्रो का जाप करवाये तथा गलें में सरस्वती लाकेट धारण करवायें। लाभ मिलेगा।

डा.महेश पारासर

शेष पेज 12 से आगे.....

सत्ता और स्वार्थ ने अपनी आकांक्षी योजनाओं को पूर्णता देने मैं नैतिक कायरता दिखाई है। इसकी बजह से लोगों में विश्वास इस कदर उठ गया कि चौराहे पर खड़े आदमी को सही रास्ता दिखाने वाला भी झूठा सा लगता है। आंखे उस चेहरे पर सचाई की साक्षी ढूंढती है। समस्याओं से लड़ने के लिये हमारी तैयारी पूरे मन से होनी चाहिये। सरदार पटेल का एक मार्मिक कथन है कि यह सच है कि पानी में तैरने वाले ही डूबते है। किनारे पर खड़े रहने वाले नहीं। मगर ऐसे लोग तैरना भी नही सीखते। ठीक इसी भांति स्वस्थ राजनीतिक निर्माण करने में वे ही लोग सफल होते है जो कठिनाइयों एंव विपरीत परिस्थितियों का पूरे साहस, निस्वार्थभाव, एंव आत्मविश्वास के साथ करते है। हमारे भीतर नीति और निष्ठा के साथ गहरी जागृति की जरूरत है नीतियां सिर्फ शब्दों में हो या निष्ठा पर, संदेश की परतें पड़ने लंगे तो भला उपलब्धियों का आंकड़ा वजनदार कैसे होगा। बिना जागती आंखो के सुरक्षा की साक्षी भी कैसी एक वफादार चौकीदार अच्छा सपना देखने पर भी इसलिये मालिक द्वारा तत्काल हटा दिया जाता है कि पहरेदारी में सपनों का ख्याल चोरी को खुला आमंत्रण है।

लोकतंत्र में राजनीतिक दलों का मौजूदा आचरण स्वीकार्य नहीं। पूरा राजनीतिक वातावरण ही हास्यापद हो चुका है। यदि हालत नहीं सुधरे तो राजनीतिक दलों की दुर्गति तय है। बदलती राजनीतिक सोच एंव व्यवस्था के मंच पर बिखरते मानवीय मूल्यों के बीच अपने आदर्शो को, उदेश्यों को, सिद्धातों को, परम्पराओं को और जीवनशैली को हम कोई ऐसा रंग न दे दें कि उससे उभरने वाली आकृतियां हमारी भावी पीढ़ी को सही रास्ता न दिखा सकें।

राजनीति का वह युग बीत चुका जब राजनीतिज्ञ आदर्शो पर चलते थे। आज हम राजनीतिक दलों की विभीषिका और उसकी अतियों से ग्रस्त होकर राष्ट्र के मूल्यों को भूल गए है। भारतीय राजनीति उथल पुथल के दौर से गुजर रही है। चारों और भ्रम और मायाजाल का बातावरण है। भ्रष्टाचार और घोटालों के शोर और किस्म किस्म के आरोपों के बीच देश ने अपनी नैतिक एंव चारित्रिक गरिमा को खोया है। मुद्दों की जगह अभद्र टिप्पणियों ने ली है। व्यक्तिगत रूप से छींटाकाशी की जा रही है। कई राजनीतिक दल तो पारिवारिक उत्थान और उन्नयन के लिये व्यावसायिक संगठन बन चुके है। सामाजिक एकता की बात कौन करता है। आज देशमें भारतीय कोई नहीं नजर आ रहा क्योकि उत्तर भारतीय दक्षिण भारतीय, महाराष्ट्रीयन, पंजाबी, तमिल की पहचान भारतीयता पर हावी हो चुकी है। वोट बैक की राजनीतिक ने सामाजिक व्यवस्था को क्षत विक्षत करके रख दिया है। ऐसा लगता है कि सब चोर एक साथ शोर मचा रहे है। देश की जनता बोर हो चुकी है। कौन दिलायेगा इन विषम स्थितियों से छुटकारा। मसीहा के इंतजार में बैठे रहने का वक्त बीत गया। अगर आप देश और समाज की बेहतरी की उम्मीद करते है, तो मौजूदा नेतृत्व पर ऐसा सिस्टम लागू करने के लिये दबाब बनाएं, जो तटस्थ होकर अपना काम करता जाए। हम सचमुच भ्रष्टाचार से छुटकारा पाना चाहते है और जबावदेही और खुलेपन की नीतियां लागू करवाने के पक्षघर है तो वैसी मानसिकता को विकसित करना होगा। अपनी पंसद से कोई ईमानदार नहीं होना चाहेगा। बेईमान से लड़ने की दीवानगी कहीं नहीं मिलेगी, यहां तक कि बोट की दावेदारी के लिये अच्छे उम्मीदवार भी हमें नहीं मिलेंगें। हम सिर्फ अपनी आवाज बुलंद कर सकते है जिसके जबाब में यही नेता कुछ नए कायदे लाएगें और अनचाहे अपनी राह सुधारने को मजबूर होंगें। कोई देश या पार्टी अगर सक्षम नेता की कमी से मुरझा रही है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि नए नेता के बिना काम नहीं चलता बल्कि यह है कि उसने अपने भीतर नेतृत्व का माहौल तैयार ही नहीं किया या ऐसी मानसिकता को जगह ही नहीं दीं।

हमे अतीत की भूलों को सुधारना और भविष्य के निर्माण में सावधानी से आगे कदमों को बढाना होगा। वर्तमान के हाथों में जीवन की संपूर्ण जिम्मेदारियां थमी हुई है। हो सकता है। कि हम परिस्थितियों को न बदल सकें पर उनके प्रति अपना रूख बदलकर नया रास्ता तो अवश्य खोज सकते है। आने वाले चुनावों का सबसे बड़ा संकल्प यही हो कि राष्ट्रहित में स्वार्थों से ऊपर उठकर काम करेंगें। राष्ट्र सर्वोपरि है और राष्ट्र सर्वोपरि रहेगा। व्यक्ति का क्या मूल और क्या विसात। विरोध नीतिगत होना चाहिये। व्यक्तिगत नहीं। मूल्यों एंव सिद्धान्तों को शक्तिशाली बनाना होगा। ❋❋❋

शेष पेज 6 से आगे .....

है। इनमें भी इन दोनों ग्रहों का योग आपके लिये फायेदेमंद रहेगा।

बुध व शुक्र से आजीविका– बुध के साथ शुक्र का संबन्ध आजीविका स्थान से होने से आजीविका के तौर पर आप कम्प्युटर का बिजनेस कर सकते है। कॉस्मैटिक्स एंव आर्टिफिशियल ज्वेलरी का व्यवसाय भी आप आजीविका के तौर पर अपना सकते है। अगर आपकी रूची कला के क्षेत्र में है तो इस क्षेत्र में भी आप प्रयास कर सकते है। रेडियो एंव टेलीविजन कलाकर रेडियों जाकी का काम आप आजीविका के तौर पर अपना सकते है।

बुध व शनि से आजीविका– बुध व शनि आपकी कुण्डली के दसवें घर में बैठा हो अथवा दसवें भाव में स्थित बुध को शनि देखता है। तो आप प्रेस में काम कर सकते है। स्क्रीन प्रिंटिंग का काम आपके लिये आजीविका का बेहतर माध्ययम हो सकता है। आप उन कार्यों को भी आजीविका के तौर पर अपना सकते है। जो आपके मामा जी की आजीविका का साधन है।

बुध व राहु से आजीविका– बुध के साथ राहु का सम्बन्ध अगर दसवें घर में हो तो शेयर बाजार में उन्नति का अच्छा अवसर मिलता है। अगर आपकी कुण्डली में इन दोनों ग्रहों का संयोग बन रहा है तो आप शेयर ब्रोकर का कार्य कर सकते है। ट्रेडिंग कर सकते है। आजीविका के तौर पर ज्योतिषी का कार्य भी आपके लिये फायदेमंद हो सकता है। शिक्षा ग्रहण कर आप खगोलशास्त्री बन सकते है। आजीविका की दृष्टि से यह भी आपके लिये उत्तम रहेगा।

बुध व केतु से आजीविका– बुध का सम्बन्ध केतु से होने पर आप रसायनशास्त्री बन सकते है।आप चाहें तो केमिस्ट की दुकान खोल सकते है शिक्षा में मन लगायें तो गणित के विद्वान हो सकते है। तथा इसे आजीविका के तौर पर अपना सकते है। खोजी प्रवृति के इंसान होने कारण आप शोध कार्यो में संलग्न रहना चाहेगें प्राचीन सहित्यों पर शोध करेंगें तथा इसमें ख्याति प्राप्त करेंगें। ❋❋❋

शेष पेज 5 से आगे .....

7. कामना पूर्ति के लिये केवल दूध की धारा से अभिषेक करें।

8. बुद्धि की जडता को दूर करने के लिये शक्कर मिले दूध से अभिषेक करें ऐसा करने से बुद्धि श्रेष्ठ होती है।

9. शत्रुओं के नाश के लिये सरसों के तेल से अभिषेक करें।

10. पापों की मुक्ति के लिये शहद से अभिषेक करें।

11. जो स्त्रियां संतान सुख से वंचित है वे गाय के दूध से अभिषेक करें।

12. आजीवन आरोग्य रहने के लिये देशी घी से अभिषेक करें।

13. दीर्घायु के लिये गाय के दूध से शिव को प्रसन्न करें।

यदि किसी की कुंडली में मारकेश हो एंव जिनकी तबियत हमेशा खराब रहती हो वे शिवरात्रि के दिन को महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें और गले में महामृत्युंजय असाध्य रक्षा कवच का लाकेट धारण करें एंव महामृत्युजंय यंत्र की स्थापना एंव पूजन करें। इस दिन शिव के मंत्रो द्वारा हवन करने का विशेष फल है।

❋❋❋

शेष पेज 7 से आगे .....

करना चहिये और दशांश हवन भी करना चाहिये और कपूर से आरती करने के पश्चात् निम्न प्रार्थना करनी चाहिये।

सरस्वती महाभोग विद्ये कमललोचने
विद्या रूपे विशालाक्षी विद्यादेहि नमोस्तुते

विशेष– इस पर्व पर सिद्ध यंत्र का पूजन एंव सिद्ध सरस्वती यंत्र का लॉकेट धारण करने से मां सरस्वती की विशेष कृपा प्राप्त होती है।एंव व्यक्ति का बुद्धि विवेक सदैव जागृत रहता है। पढने वाले बच्चों को इस पर्व पर सिद्ध बुद्धि वाचक यंत्र का पूजन प्रारम्भ करना चहिये।

❋❋❋

शेष पेज 8 से आगे .....

गौमूत्र गोबर गौघृत गौदुग्ध गौदीय और गौरोचन में गाय के छ पदार्थ सर्वदा गंद्धलिक होते है।

शास्त्रों के अनुसार गौ सेवा करने से मनुष्य सभी सुखो को प्राप्त करता है तथा मरणोपरान्त स्वर्ग में वास करता है। आज विज्ञान द्वारा सिद्ध हो चुका है कि गौधन सबसे बड़ा धन है। गौ हत्या बंद हो क्योकि यदि आर्थिक दृष्टि से भी अगर देखा जाये तो जीवित गौ ज्यादा लाभकारी है। अतः आप सभी से निवेदन है कि गौ को अत्म निर्भर ही नहीं बल्कि स्वंय को समाज को राष्ट्र को तथा सम्पूर्ण पृथ्वी को तीनों तापो से मुक्त करें। विज्ञान की सहायता से गौ से प्राप्त अमृत को कई धरेलू उत्पादों में प्रयोग लाया जा रहा हैं जैसे शुद्ध किया हुआ गौमूत्र, फिनायल, साबुन, तेल शेम्पू, तथा कई दवाओं का भी उत्पादन हो रहा है जिसे प्रयोग कर आप स्वस्थ्य रह सकते है तथा गौ सेवा में अपना योगदान दे सकते है।

गौ माता की जय

❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे .....

ही है। यह महिला कृतिका नक्षत्र में पैदा हुई फलस्वरूप सूर्य, चन्द्र, मंगल व राहु की दशायें 37 वर्ष तक चली किन्तु इस महिला की शादी ही नही हुई। जन्म पत्रिका में तीन ग्रह उच्च राशि में स्थिति है तव भी जातक को कोई भी ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता सिद्ध प्रतीत नहीं होती है। यह एक अपवाद योग है।

अब एक दूसरी महिला की जन्म पत्र दे रहा हूँ जिसमें कोई राज योग, अधियोग, चन्द्रादि–लग्नादि योग नहीं है

जन्म 15–09–1969 राहु 11 वर्ष 8 माह 15 दिन

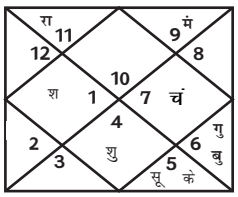

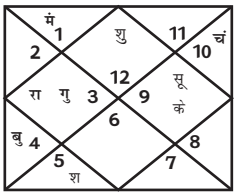

आप देखेंगें – लग्नाधिपति शनि नीच राशि में वक्र होकर स्थिति है किन्तु नीच भंग राज योग की सृष्टि हो रही है क्योकि सूर्य मेष राशि में उच्च होता है। जो स्वराशि में अष्ठम भाव में स्थित है। दूसरे दशमेश तथा सप्तमेश का राशि परिवर्तन होने के कारण त्रिकोण व केन्द्र का सम्बन्ध बनाकर राजयोग की सृष्टि कर रहा है फल स्वरूप इस महिला की शादी एक बहुत ही सम्पन्न परिवार उत्तम वर जो इन्जीनियर व एम.बी.ए हैं। महिला की जन्मपत्रिका में भाग्येश उच्च राशि में गुरू धन दायक के साथ स्थित होने के कारण महिला का जीवन अपने पति के साथ ठाठ बाट के साथ व्यतीत हो रहा है। महिला के नवमांश कुण्डली में शुक्र लग्न में उच्च राशि में स्थिति होने के कारण पूर्ण भोग साम्रगी के साथ जीवन व्यतीत हो रहा है।

यह एक स्पष्ट अनुभव योग का दृष्टान्त है इससे सिद्ध होता भगवान ब्रह्मा भाग्य की सृष्टि करते है तथा दूसरे को अभाग्य की प्राप्ति होती है।

❋❋❋

कालसर्प योग शान्ति हेतु मिलें

8 मार्च 2016 को महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन द्वारा श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम पर कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराने चाहते है वह अपना नाम नीचे लिखे हुये मो. न. पर फोन कर के पंजीकृत अवश्य करा लें।

मो. 9719666777, 9837966404, 9319221203

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262